भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

किसान मेला
एवं
नवाचार दिवस

23 सितम्बर 2017

निमन्त्रण

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

जोधपुर 342 003, राजस्थान

किसान भाईयों व बहनों,

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आपको किसान मेले का निमंत्रण देते हुए हमें अपार हर्ष है। कृषि प्रधान देश भारत में कृषकों का योगदान देश की आर्थिक प्रगति का मुख्य आधार रहा है। साठ एवं सत्तर के दशक में जहाँ देश ने हरित क्रांति का युग देखा वहीं नब्बे के दशक में ढांचागत आर्थिक सुधारों के कारण कृषि में कुल उत्पादन निरंतर विकास की राह पर बढ़ रहा है। वर्ष 2016 में देश का कुल खाद्यान उत्पादन 27 करोड़ टन को पार कर गया है। कृषि क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि का श्रेय किसान और विज्ञान दोनों को दिया जाता है। विज्ञान ने नई किस्में, उन्नत शस्य प्रौद्योगिकी, एकीकृत कीट नियंत्रण, कटाई उपरांत भंडारण/प्रसंस्करण व पशुपालन को समृद्ध किया है वहीं किसान ने इन वैज्ञानिक तकनीकों को अपना कर सकल राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि की है। कृषि क्षेत्र में नवाचार की विपुल संभावनाएं हैं। जो किसान पंरम्परागत कृषि में नवाचार को अपना रहे हैं उनकी आर्थिक स्थिति में तेजी से सुधार हो रहा है।

राजस्थान प्रदेश में कृषि मुख्यतः वर्षा आधारित है। राज्य में कृषि हेतु 179 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल उपलब्ध है, जो अन्य राज्यों की तुलना में सबसे अधिक है। यहाँ प्रति जोत कुल कृषि भूमि अधिक है। क्षेत्रफल अधिक होने के कारण कृषि में नवाचार व उत्कृष्ट उत्पादन की अधिक संभावनाएं हैं। प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, मृदा व सौर ऊर्जा के समुचित उपयोग, वनीकरण, पशुपालन, प्रसंस्करण तकनीक, उत्पादन आर्थिकी व प्रसार सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए 1959 में केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की स्थापना जोधपुर में हुई थी। संस्थान द्वारा शुष्क क्षेत्र की समस्याओं के निराकरण के लिए टिब्बा स्थिरीकरण, शैल्टर बैल्ट प्लांटेशन (हरित पट्टी), माईक्रो विन्ड–ब्रेक, घास की स्ट्रिप क्रॉपिंग, क्षारीय भूमि का जिप्सम द्वारा उपचार, उन्नत टांका, खडीन एवं नाडी निर्माण की तकनीकें विगत दशकों में विकसित की गईं। वहीं समय के साथ घटते प्राकृतिक संसाधनों, बढ़ती सिंचाई सुविधाओं और सौर ऊर्जा के पर्याप्त दोहन के लिए संस्थान के वैज्ञानिक नित नये अनुसंधान व प्रयोग कर रहे हैं। सौर ऊर्जा संयत्रों के साथ खेती की प्रणाली विकसित करने वाला देश में यह पहला संस्थान है। यहाँ 105 किलोवाट क्षमता वाले फोटो वोल्टेइक सौर संयत्र से बिजली उत्पन्न की जाती है तथा इस संयत्र के नीचे दलहनों की सफलतापूर्वक खेती की जा रही है तथा वर्षा के जल का संग्रहण भी करते हैं।

किसान भाईयों और बहनों, सीमित प्राकृतिक संसाधनों से युक्त यह क्षेत्र अनेक समस्याओं जैसे अपर्याप्त वर्षा, उच्च तापमान,

तीव्र वायु गति, उच्च वाष्पीकरण दर, भूक्षरण, मिट्टी व पानी की क्षारीयता व भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन से ग्रसित है। बढ़ती मानव और पशु संख्या, आर्थिक संसाधनों का अभाव, अशिक्षा, पारम्परिक खेती के तरीके व सूखे की समस्या का इस क्षेत्र के निवासियों को निरन्तर सामना करना पड़ता है। परिणामस्वरूप क्षेत्र में आजीविका में स्थायित्व नहीं है जिसका असर समाज के आर्थिक व समाजिक ढांचे पर पड़ता है। इसलिए विकास की राह पकड़ने के लिए कृषि उद्यानिकी, वानिकी, पशुपालन, मूल्य संवर्धित उत्पाद इत्यादि तकनीकियों का किसानों द्वारा नवाचार करना आवश्यक है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए उपचारित चारा, बहु पोषण तत्व युक्त पशु आहार बट्टिका, पूर्ण आहार बट्टिका, स्थानीय उन्नत नस्ल के दुधारू पशुओं के संरक्षण व संवर्धन की प्रौद्योगिकी संस्थान द्वारा विकसित की गई है। कृषि वानिकी व वानिकी आधारित उत्पादों के दोहन के लिए भी प्रौद्योगिकी विकसित की गई है। कुमट के पेड़ से 500 ग्राम तक उच्च गुणवत्ता युक्त गोंद प्राप्त करने का इंजेक्शन भी संस्थान में विकसित किया गया है। शुष्क उद्यानिकी ने संस्थान का नाम देश व विदेशों में रोशन किया है। यहां विकसित बेर की गोला व सेव प्रजातियों के पौधे दूर–दूर से किसान आकर ले जाते हैं। अनार, अंजीर, बेर व आंवले के उन्नत पौधों की मांग भी किसान समुदाय में हमेशा रहती है। इन फलों का परिरक्षण कर जैम, जैली, कैण्डी, मुरब्बा, स्क्वैश आदि बनाकर विक्रय करने से आय में वृद्धि होती है।

संस्थान द्वारा श्रम व ऊर्जा में बचत के लिए विभिन्न कृषि उपकरणों का निर्माण किया गया है। उन्नत कस्सी से महिला श्रम में बचत होती है। सोलर ऊर्जा से संचालित कई संयंत्रों का निर्माण भी किया गया है। एकीकृत नाशी जीव प्रबन्धन व जैविक खेती से फसल उत्पादन पर आवश्यक अनुसंधान कार्य जारी है। चूहा नियंत्रण व अन्य कशेरूकी पशुओं की रोकथाम भी संस्थान के अनुसंधान अनुप्रयोगों में निरन्तर रहती है।

इन प्रौद्योगिकियों को किसानों तक सही व सरल तरीके से पहुंचाने के लिए संस्थान द्वारा एकल खिड़की योजना के अन्तर्गत कृषि तकनीक सूचना केन्द्र, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में किसान को आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण व प्रशिक्षण विभाग व किसानों को "कार्य करके पढ़ाओ" और "कार्य करके सीखो पद्धति" पर कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना जोधपुर, पाली व भुज में की गई है। संस्थान द्वारा किसान, महिलाओं, युवा, स्कूल के बच्चों, विषय विशेषज्ञों आदि को प्रशिक्षण दिया जाता है। किसानों की समस्याओं के शीघ्र समाधान के लिए फोन सेवा 0291–2786812 उपलब्ध है। मेरा गाँव मेरा गौरव पहल के तहत संस्थान की 22 टीमों ने 103 गाँवों का चयन किया है, जिससे किसान समय–समय पर लाभान्वित होते रहे हैं।

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण व प्रशिक्षण विभाग द्वारा वर्ष 1972 से प्रति वर्ष कृषि मेले का आयोजन किया जाता है। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संस्थान में कृषि मेला व कृषि नवाचार दिवस का आयोजन 23 सितम्बर, 2017 को किया जा रहा है। कृषि मेले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के विभिन्न संस्थान, भारत एवं राज्य स्तर के कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित विभाग, गैर सरकारी व निजी संस्थानों द्वारा प्रदर्शनी के माध्यम से उन्नत तकनीकियों व उत्पादों की जानकारी किसानों को दी जाएगी। काजरी के अनुसंधान प्रक्षेत्र का भ्रमण एवं किसान गोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा। इस गोष्ठी में किसान लगभग 50 विशेषज्ञों से सीधा संवाद कर सकेंगे।

मेला आयोजन के उद्देश्य

1. क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को कृषि, पशुपालन एवं नवाचार से सम्बन्धित उन्नत तकनीकियों के बारे में अवगत कराना।
2. प्रदर्शनी, किसान संगोष्ठी एवं क्षेत्र भ्रमण द्वारा किसानों की कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करना।
3. किसानों को कृषि एवं पशुपालन की उन्नत तकनीकियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

4. क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों को पुरस्कृत कर अन्य किसानों को भी कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना।

5. शुष्क क्षेत्र में कृषि एवं पशुपालन से सम्बन्धित अनुसंधान एवं विकास के लिए कार्य करने वाली संस्थाओं की तकनीकियों एवं उत्पादों को एक ही स्थान पर उपलब्ध कराना।

किसान मेला एवं नवाचार दिवस के आकर्षण

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राज्य के कृषि एवं पशुपालन विभाग और इनसे सम्बन्धित सार्वजनिक उपक्रम एवं निजी क्षेत्र के बीज उत्पादन संगठन, कृषि यन्त्र आदि की 50 से अधिक स्टालों पर विभिन्न तकनीकियों और सेवाओं का प्रदर्शन किया जायेगा। बहुत से उत्पादों की बिक्री एवं तकनीकियों की जानकारी उपलब्ध कराई जायेगी।

- किसानों को इस दौरान संस्थान के विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों का भ्रमण कराया जायेगा, जिसमें फसलों का क्षेत्र प्रदर्शन, अनुसंधान फार्म, पशुपालन व नर्सरी, जैविक खेती सौर ऊर्जा ईकाई, कृषि तकनीक सूचना केन्द्र और अन्य अनुसंधान क्षेत्र सम्मिलित होंगे।

- इस दिन किसान गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा, जिसमें किसान अपनी समस्याओं के बारे में वैज्ञानिकों से सीधा संवाद कर सकेंगे। इस गोष्ठी में सभी फसलों, उद्यानिकी और कृषि वानिकी, कीट एवं बीमारी प्रबंधन, पशुपालन, कृषि यन्त्र, खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषयों पर चर्चा होगी।

- नवाचारी/अभिनव प्रयोग व वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करने वाले दस किसानों (महिला/पुरूष किसान) को उनके द्वारा पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में विभिन्न तकनीकी द्वारा कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया जायेगा।

- यह मेला राजस्थान के विभिन्न भागों से आये कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए आपस में बात–चीत करके विभिन्न कृषि उत्पादन एवं पशुपालन के अभिनव तरीकों का आदान–प्रदान करने का भी एक सुनहरा अवसर है।

- किसानों के खेत की उत्कृष्ट फसल–पौधों का प्रदर्शन होगा तथा इसमें सर्वश्रेष्ठ उत्पाद को पुरस्कृत किया जायेगा।

- जो किसान मित्र अपने खेत की मिट्टी व पानी की जांच कराना चाहते हैं तथा मिट्टी व पानी के नमूने साथ लेकर आएं हैं वह संस्थान के प्रवेश द्वार पर स्थित कृषि तकनीक सूचना केन्द्र में इन्हें जमा करवा सकते हैं।

- कृषि मेले में किसान M-Kisan portal पर पंजीकरण हेतु फार्म भी भर सकेंगें। इससे उनको नवीनतम कृषि जानकारी मोबाईल पर मिलने लगेगी।

आधुनिक युग में कृषि में डिजिटल क्रांति ने किसानों के लिए अनेक सुविधाओं का सृजन किया हैं। सूचना तंत्र को मजबूत करने की दिशा में एम–किसान, ई–किसान, किसान कॉल सेंटर, फसल बीमा पोर्टल, काजरी कृषि मोबाईल एप, कृषि तकनीक सूचना केन्द्र, किसान सुविधा मोबाईल एप्लिकेशन आदि शुरू की गई हैं। निम्नलिखित वेबसाईट पर अधिक जानकारी प्राप्त कर किसान लाभान्वित हो सकते हैं जैसेः– www.icar.org.in www.cazri.res.in www.mkisan.gov.in www.enam.gov.in www.help.agri_insurance@gov.in टोल फ्री नम्बर 1800–180–1551, काजरी फोन सुविधा 0291–2786812

आपसे निवेदन हैं कि मेले में पधार कर अधिक से अधिक ज्ञानार्जन करें।

सम्पर्क सूत्र

डॉ. प्रतिभा तिवारी
विभागाध्यक्ष एवं मेला संयोजिका

डॉ. ओ.पी. यादव
निदेशक, काजरी

प्रौद्योगिकी स्थानान्तरण, प्रशिक्षण एवं उत्पादन आर्थिकी अनुभाग
कृषि तकनीक सूचना केन्द्र, कृषि विज्ञान केन्द्र
भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर 342003, राजस्थान
फोन :- 0291-2786632, 2786812, 2786584
Website : www.cazri.res.in
E-mail : director.cazri@icar.gov.in

नोट :- यदि कोई संगठन / संस्थान / NGO अपने कृषि सम्बन्धी उत्पाद प्रदर्शनी में रखना चाहते हैं तो कृपया पूर्व सूचना देने का कष्ट करें।